

comp. auftritt: अन्योऽन्यस्ताः प्राचोप. 5, 6. व्यतिपत्ताः M. 10, 25. संयोगः कन्यायाश्च वरस्य च 3, 32. गुणविशेष्यात् 9, 296. अपकृतं द्वयम् JĀGŪ. 2, 126. एवमपतितान्योऽन्यत्यागी von diesen Einer den Andern verlassend, ohne dass dieser ausgestossen wäre 237. असृशौ R. 4, 2, 10, 12, 28. शरंपते 3, 34, 9. गर्हितान्योऽन्यमतयो मखिणाः 5, 77, 15. तावन्योऽन्याञ्जलिं कृत्वा 1, 10, 28. कृत्यैः ÇĀK. 193. फलभक्षिणः PAÑKĀT. V, 86. आहारदानेन Hit. 25, 17. दर्शन Ragh. 12, 87. ज्ञयसंरम्भ 92. पुच्छाभिमुखम् — मत्स्यद्वयम् ÇĀPATI in Z. f. d. K. d. M. III, 389. — Vgl. इतरतर and परस्पर.

अन्योऽन्याभाव (अन्योऽन्य + अभाव) m. gegenseitiges Nichtsein BuĀSHĀP. 11. Z. d. d. m. G. VI, 13.

अन्योऽन्याश्रय (अन्योऽन्य + आश्रय) m. gegenseitige Abhängigkeit oder adj. gegenseitig von einander abhängig. ÇĀKDr.: त्रि (also adj.) । परस्परज्ञानसापेक्षज्ञानाश्रयः । इति स्मार्ताः । स्वग्रहसापेक्षग्रहसापेक्षप्रकृताः । इति तार्किकाः ॥ तर्कविशेषः । तस्य लक्षणम् । स्वापेक्षापेक्षितवनिबन्धनप्रसङ्गत्वम् । अपेक्षा च ज्ञाते उत्पत्ति स्थितौ च ग्राह्या । तत्राद्या यथा । घटो ऽयं यद्येतद्द्वयज्ञानान्यज्ञानविषयः स्यात्तदैतद्द्वयभिन्नः स्यात् । द्वितीया यथा । घटो ऽयं यद्येतद्द्वयज्ञानान्यः स्यात्तदैतद्द्वयभिन्नः स्यात् । तृतीया यथा । घटो ऽयं यद्येतद्द्वयवृत्तिवृत्तिः स्यात्तथात्वेनोपलभ्येत । इति त्रैगदीशः ॥

अन्योऽन्योक्ति (अन्योऽन्य + उक्ति) f. Unterredung, Gespräch H. 275.

अन्वक् s. u. अन्वच्च.

अन्वत्त (1. अनु + अन्त Auge) adj. nachfolgend AK. 3, 2, 28. H. 1437.

Davon ञ्त्तम् adv. gaṇa शरदादि; Vop. 6, 65. hinterher: आरोक्त लम् — नावमिमां — सीतां चोरपयान्वत्तम् R. 2, 32, 69. unmittelbar darnach, sogleich JĀGŪ. 3, 21.

अन्वभावम् (von अन्वच्च + भाव) adv. hinterher (अनुलोम्ये) P. 3, 4, 64.

अन्वङ्गम् (von 1. अनु + 3. अङ्ग) adv. hinter jedem Gliede, für jeden Theil einer Handlung: आश्रितेन ग्रहे गृहीत्वान्वङ्गमाश्रितमाशास्ते ÇĀT. Br. 4, 5, 6, 4.

अन्वञ्च (von अञ्च mit अनु) adj. (nom. m. अन्वङ्, n. अन्वक्) f. अन्वञ्ची und अन्वञ्ची 1) der Richtung eines Andern folgend, hinterher folgend AK. 3, 2, 28. H. 1437. समानबन्धु अन्वते अनुञ्ची यावा वर्षे चरत आमिनानि RV. 1, 113, 2. ऋक् प्रतीचो अन्वचः पराचः 3, 30, 6. AV. 40, 10, 10. तस्माद् सक्तु सतो ऽनाविक्रस्येभयस्यैवाजाः पूर्वा यद्व्यनुञ्चो ऽवयः ÇĀT. Br. 4, 5, 5, 4. स एव तत्र प्रथमं एत्यनुच्य इतराः 1, 3, 1, 9. तस्मादिमे ऽन्वञ्चो मासा यन्ति 4, 3, 4, 9. Mit dem acc.: तदनुचो दृष्टिणा 1, 9, 3, 1. 4, 3, 4, 6. त्वान्वञ्चो वपे स्मसि Ait. Br. 7, 18. देवानां पत्नीः शंसत्यनुचरिणिं गृह्यति 3, 37. ĀCv. GRHJ. 4, 2. Davon adv. अन्वक् gaṇa स्वरादि; hinterher: पशुश्चान्वक् KĀT. Çr. 6, 5, 6. ऊर्वत्तरे वावाताया ब्रह्मचारीतराश्चान्वक् 20, 1, 18. 19. अन्वगेवाकृमिच्छामि वने गन्तुम् R. 2, 22, 11. अन्वाभूय oder भूत्वा P. 3, 4, 64. Mit dem acc.: एकविंशतिप्रदानानेके ऽन्वञ्जातुमास्यदेवताः (Sch.: चा० अनुद्भृत्य) KĀT. Çr. 20, 7, 22. ताम् — अन्वाभयौ Ragh. 2, 16. — 2) der Länge nach genommen: जिनतो वैश्रवं त्वं सीमन्तमन्वञ्चमनु पातय AV. 6, 134, 3. त्वान्वञ्चङ्गापतिः (SĀJ.: = आयामवान् im Gegens. zu तिर्यङ्) ÇĀT. Br. 5, 1, 5, 13. तस्मादिमे ऽन्वञ्चश्च तिर्यञ्चात्मप्राणाः 8, 1, 3, 10.

अन्वध्यायम् (von 1. अनु + अध्याय) adv. dem heiligen Texte gemäss, im Gegens. zu भाषायाम् Nir. 1, 4.

अन्वय (von इ mit अनु) m. n. Siddh. K. 249, a, 16. 1) Nachtritt, Nach-

folge: कामवृत्तो ऽन्वयं लोकः कृत्स्नः समुपवर्तते । यद्वृत्ताः सति राजानस्तद्वृत्ताः सति हि प्रजाः । R. 2, 109, 9. — 2) m. Nachkommenschaft JĀGŪ. 2, 117. सान्वयः mit der N. M. 2, 168. 3, 205. PAÑKĀT. 45, 6. — 3) m. Familie, Geschlecht AK. 2, 7, 1. H. 503. श्रोत्रियान्वयजाः M. 3, 184. द्विजान्वयप्रणीतं यो नित्यं धर्मं निषेवते ÇĀK. 41, 12. तत्रान्वय adj. R. 1, 1, 96. कथमेकान्वयो मम ÇĀK. 104, 8. रघूणामन्वयं वक्ष्ये Ragh. 1, 9. अमस्त चानेन — स्थितिमतमन्वयम् 3, 27. अन्वयगतं वैरम् PAÑKĀT. 168, 23. सान्वय (Gegens. निरन्वय) von derselben Familie M. 8, 198. Am Ende eines adj. comp. f. आ Ragh. 12, 33: कथितान्वया, Vid. 148: महान्वया. — 4) Verbindung, das Verbundensein oder Verbundenwerden: गुणान्वय adj. (= गुणाश्रित) ÇĀT. Br. 4, 5, 7. क्तिनसत्त्वत्वान्वयैः adj. R. 3, 4, 27. गन्धः — कटुकान्वयः 16, 7. Gegens. व्यतिरेक SĀH. D. 4, 6. Z. d. d. m. G. VII, 289, N. 3. सान्वय der mit einem Andern in irgend einer Verbindung steht (Gegens. निरन्वय) M. 8, 334. — 5) der natürliche Zusammenhang der Dinge: श्रौचित्यान्वयप्रज्ञा च यथाशक्त्यभिधीयते (in diesem Werke) KATHĀS. 1, 11. — 6) die logische Verbindung eines Wortes mit einem andern im Satze und die auf die Nachweisung derselben gerichtete Thätigkeit, = पदानो परस्परवाक्याङ्गा योग्यता च DURGAD. im ÇĀKDr. = परस्परसंबन्ध RĀMATĀKĀV. ebend. = शब्दानां परस्परमर्थानुगमनम् H. 2, Sch. योगो ऽन्वयः स तु गुणाक्रियासंबन्धसंभवः H. 2. वाक्यार्थ ऽन्वयसिद्धये SĀH. D. 11, 20. पदान्वयबोधने 22, 3. दैव्यं सो (d. i. पदैव्यं समासो) ऽन्वये Vop. 6, 1. इति पाठे ऽयमन्वयः ÇĀK. 16, Sch. अत्र (im Beispiel तिष्ठतु सर्पिः) सर्पिशब्दस्य स्थितिक्रियाग्रामन्वयः daselbst steht das Wort सर्पिः in einer logischen Verbindung zum Verbalbegriff «stehen» P. 8, 3, 44, Sch. परस्परनिरपेक्षस्यनेकस्य एकस्मिन्नन्वयः समुच्चयः Siddh. K. zu P. 2, 2, 29. (s. die Erklärer zu AK. 3, 4, 32, 2.) Vgl. noch u. अनुषङ्ग 6. — अन्वयवैधिका and अन्वयार्थप्रकाशिका Namen zweier Commentare Gilb. Bibl. 237. COLEBR. Misc. Ess. I, 325. — Vgl. अन्ववाय.

अन्वयवत् (von अन्वय) adj. wobei eine Verbindung, ein Zusammenstossen stattfindet: स्यात्साकसं लन्वयवत्प्रसभं कर्म यत्कृतम् । निरन्वये भवेत्स्तेयम् M. 8, 332. Beim Raube findet ein Zusammenstossen mit dem Besitzer statt, beim Diebstahl nicht. KULL.: यद्द्वान्यापकारादिकं कर्म द्रव्यस्वामिसमत्वं बलाद्धृतं तत्साकसं स्यात् । — । यत्पुनः स्वामिपरोक्षपकृतं तत्स्तेयं भवेत्.

अन्वर्तिरूर् (von अन्वर्त्य = अन्वय् mit अनु) m. Einlader: अन्वर्तिता वरुणामित्र शीसोद्विहेतो कृस्तगृह्या निताय RV. 10, 109, 2.

अन्वर्थ (1. अनु + अर्थ) adj. f. आ dessen Sinn sich von selbst ergibt, verständlich: हेतुमहाव्यमन्वर्थं लक्षणाः प्रत्युवाच ह R. 6, 67, 26. नामान्वर्थेन विख्यातो यो मनोरथदायकः KATHĀS. 22, 18. 23, 33. निबन्धवृत्ती अन्वर्थे H. 237. VĀĀSP. zu 1194.

अन्ववचार (von चरू mit अनु + अच) m. das Hinterherziehen (neutr.): नाष्ट्राणां रत्नसामान्ववचाराय ÇĀT. Br. 4, 3, 2, 6. — Vgl. अन्ववायन.

अन्ववसर्ग (von सर्न् mit अनु + अच) m. 1) das Nachlassen, Abspannen (z. B. der Organe bei Hervorbringung der Laute, Gegens. आयाम) TAĪTT. PrĀT. 2, 10. — 2) freundliche Aufforderung P. 1, 4, 96. = कामचारानुज्ञा Sch.

अन्ववाय (von इ mit अनु + अच) m. Familie, Geschlecht AK. 2, 7, 1. H. 503. महामसुरस्यान्ववाये हिरण्यकशिपोः Sund. 1, 2. — Vgl. अन्वय.